

ASHA ARCHIVES
3204

५७ शत उद्योतरी भाषा
गंध
मनोहर दोस्ताना

कोयल अर्धे अरु वधाना साखा ननु स क ज न ॥ ३ ॥ स ॥ ति ॥
मी हा ॥ अर्धे स नादा नरक्ष सा ॥ ४ ॥ सूर्य चंद्र ना रु प्रक संग ॥ वा वि अ
क व द सा म क द गु दान उ ध न वा या उ ॥ न या सा या उ ना य ना कि ॥ ५ ॥

रुं न म ॥ श्री कृष्णाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री वक्रा नमः ॥ ॥ अथ सोपानागतिनिधि
नी ॥ ये त न्य मी ही न क अरु व द यु गु ने सा रू न र या रू नि धि का ॥ अ नू अ य नी न क जी व नू क
द र क नि व का सा य स क रे मे नि धि का का सा य स का उ रु न द य गु ॥ ॥ कृति श्री
गणेशाय नमः ॥ श्री म नारु न द्या स नि वं ड नी क रू सा रू गी ध य ध म रू व ॥ ॥ म न्या या ॥
अथ युग्म अथा रुत की ना ॥ १ ॥ मी या की ॥ २ ॥ अ वि द्या की ॥ ३ ॥ वि द्या की ॥ ४ ॥ व ध की ॥
मू क की ॥ ५ ॥ जा ग रू की ॥ ६ ॥ स्त य की ॥ ७ ॥ स मू य ति द ॥ ८ ॥ मू रू की ॥ ९ ॥ स म

कहिना॥अनू.यंयम.जीवन्मृतकाविराग.कहिना॥अनू.कु.१०.विदातासह.जा
का.यंमनकोरासकहीना॥विदातास.जीव.मृतविरागसनवंध.यायक
षटह.जाअज्ञानम.यद्ययगतनाही॥ताकाअथाकृतकहिना॥अनू.ताहिका
अथककहिना॥अनू.ताहिकासाम्यावस्काकहिना॥अनू.अथाकृतनामा॥
~~दूसरापुनःमायाकोव.~~सकहिनाह॥किंअथाकृतसाम्यावस्काकहीसुगि.गुणः
आत्मिको.ह॥जब.यंननरासकत्रिके.विकारावस्काहाय॥गव.तमगुण.त्रज

गुण.तन्यात्रासूक्ष्मसत्त्वगोभदी.त्रजसगतंन्यात्रासूक्ष्मसत्त्वगोभदी.सगतम.ग
न्यात्रा.सूक्ष्मवजसविदातासहिना.सूक्ष्मसत्त्वयुक्षनताकालीनहो॥ताकामाया
कहिना॥अनू.ताहिकासाम्यावस्काकहिना॥अनू.अथाकृतनामा॥
~~तीसरापुनः~~अविद्याकोणासकहिनाह॥किं.यी
कुंअथाकृतसाम्यावस्काकीविकार.वस्काविदातासलीनैरुणी॥तवजसमायास
द्वसत्त्वलीनरुणी॥गोभसअविद्यामलीनसत्त्वयुक्षनताविदातासलीनरुणीकिंमली
नत्रज.मलीनगम.मलीनसत्त्व.मलीनविषुवगालीन.मुखगमनगालीन.मलीन

सत्त्वप्रधानतालीनताका अविद्या कहि न ॥ षष्ठि अविद्या नाम ॥ ॥ ओ ॥ अविद्या वि
द्या कोटा ॥ विद्या कहि न हू किं ॥ महाबाह्य का अर्थ विद्या न ग ॥ इ ॥ म क न व म लि उ
य जी व र्ति ॥ अहं वं क्षा मि न सी ॥ अख अ कान व र्ति ॥ अ नू गा व र्ति क वि कार्य अ ह्ना
न कान व अ ह्ना न वा ध ग न ॥ गा व र्ति का विद्या कहि न ॥ अ नू गा वि र्ति का विद्या
ह्ना न कहि न ॥ षष्ठि विद्या ॥ ॥ य ॥ अ नू गा ॥ व न्ध को टा ॥ स व न्ध कहि न हू किं ॥ अ
ना त्त वि षं आ त्त व द्धि ता का व न्ध कहि न हू ॥ अ ना त्त कहि न हू षष्ठि विद्या ॥ मन य

दासवर्षं धाम ॥ ना विष आत्मरावकं दहा हं ॥ सा वन्ध कदि न ॥ ण्नि वन्ध ॥ ॥ य
 मूक को ॥ मूक कदि न हं किं ॥ ना हि अहिमान की किं दहा रिमानी की आनि व
 ना ना का मूक कदि न ॥ ण्नि मूक ॥ ॥ य ॥ जाय ग मूक को ॥ जाय ग अवस्था
 कदि न हं किं ॥ य उ द ग अधम तम ॥ अत्र व उ द ग अधि तम ॥ अत्र उ द ग अधि
 देव क वो द हि ती व या सी स ॥ ४१ ॥ न स व द न वि द्या मा न ॥ अस्वप्न सूय य निका अ
 राव द न सा की मली ॥ अत्र मूक ना सि से मिष्ट य षि स व द न सा की म ॥ ना का जा

गगन अवस्था कहि न॥ विष्मलि मानी की॥ ॐ ति का गगन अवस्था॥ ॥ यम सव्य अ
वस्था को धा॥ स्वप्न अवस्था कहि न॥ किं॥ सुत गनीन का रावना ही॥ अत्र सुत विष
यना हिंसा द्यो दय॥ सुषुपति अवस्था का अराव॥ अदंर अक्षता दि के की॥
समग वासना सदिता॥ अमूर्ति अविद्या मय सु अय वदान सा की सदन सा का
स्वप्नावस्था कहि न॥ न उसा अलि मानी नी॥ ॐ ति स्वप्नावस्था॥ ॥ यम सव्य
नि अवस्था को धा॥ सुषुपति कहि न॥ किं॥ समस्त वासना मय अमूर्ति अविद्या के

य वदान सु काना का कान द्या नी न अविद्या म दित्ती न गारुणी सा की कान स
नारु नक्ष॥ गा के सुषुपति अवस्था कहि न॥ या द्या लि मानी की॥ ॐ ति सुषुप
ति अवस्था॥ ॥ यम सव्य अ वस्था को धा॥ मूर्ति कहि न॥ किं॥ आ गत अवस्था
सहि अस्वा दिक नथा दिने गत्रिय न॥ अधवा म दय ना दिक के यदान रु य
तं ना गत्रिय ही॥ अत्र न दे जो लो नी लो सा की क अवां न॥ विष्म लि मानी
की मूर्ति॥ ॐ ति मूर्ति अवस्था॥ ॥ यम समाधिक सा समाधिक कहि न॥

वियुटि स्नाता स्नानं यवक्षरावनालीन रासौ ताकां सविकल्पसमाधिक
हीन वियुटी विकल्पनहित नक्षत्रक्षरावसहित ताकां निविकल्पसमाधिक हि
ना विष्मरि मानी की सा की महि ॥ ॐ नि समाधि ॥ ॥ अथ यम उनी या अव
स्वको वा ॥ उनी या अवस्व कहि ना जा गत स्वप्न सव्ययनि मूर्च्छा समाधि सब कहो
वा राव काय कासी ॥ अत्र दय कि हु ही सवम अनसुत हो हि दय न रात्रा ॥ जा
गम रि कुल वृत्ति मिलि क द व ॥ स्वप्न महि सुद्वे वृत्ति मिलि द व ॥ सवम नि

महा अविद्या वृत्ति मिलि क द व ॥ ता का उनी या अवस्व कहि ॥ उनी या कहि
न गा ॥ निविकल्प हो ग हो न हि ग हो ॥ उनी या ग त्व ॥ ॐ नि उनी या अवस्व ॥
॥ जीव को वा जीव कहि न जा ग दा दि समाधि अंत ली रि धी अरि मानी
सामलि न जी वा ॥ अत्र जा उनी या कहि न जा ग दा दि सव काय कासी सा की
॥ स्व ॥ शुद्ध जीव को स्व नृय वक्ष स्व नृय ॥ ॐ नि जीव ॥ ॥ अथ ॥ जीव को
वा ॥ ॐ नि जीव कहि ना वक्ष विष्णु नृय मूहि क्षत्र अत्र जा ॥ उनी या जीव कहि

स्वतूय वक्ष सांखु उरीयां श्रवका स्वतूय वक्ष उरीया तूय जी वक्ष न
 कां निंही व्रनामा ॥ अथ यम सा की की वा ऊं उरीया सांखु सा
 की स्वतूय ऊं सा की सायि उरीया ॥ नाने उरीया ही का सा की कहि न ॥ नि
 सा की नामा ॥ अथ यम वक्ष की वा ॥ सा की का स्वतूय निर्विकल्प सांखु ता ही
 का वक्ष कहि न ॥ सांखु निर्विकल्प सांखु वक्ष का हू सा मिली न्या ना ना ही सांखु
 निर्विकल्प वक्ष ॥ सांखु वक्ष ॥ नि वक्ष ॥ अथ यम शान च की वा ॥ ऊं

वक्ष २

यम १

॥ वक्ष सांखु शान च ॥ नि शान च ॥ अथ यम मय का सांखु सा क
 ही वा ॥ कि गा हि यि वक्ष अ वान न न क दं वा अरु न ना अरु न क राग दा य ॥
 गा दाना राग सांखु मिली च न च सू की ये अनर व क नं सूखु सा तूय च न च ॥ गा
 की शान च मय का सांखु कहि न ॥ नि शान च मय का सांखु ॥ यम विरु न मय
 का सांखु वा ॥ शान च का ऊ हा सु म न ट क न च न च ॥ ऊ का विरु न मय का सां
 कहि न ॥ नि विरु न मय का सां ॥ अथ यम ना मय का सांखु वा ॥ ऊ हा म न स

कल्यकत्रं तदा मनामयकाशकदिनु॥ ॐ निमनामयकाश॥ ॥ यमसा
मयकाशकोवा॥ ऊहाऊ मयकाशकोवा॥ अनरुव तादायामयकाशकदिनु॥
ॐ निमनामयकाश॥ ॥ यममयकाशकोवा॥ सुलदहादिमानीकनेका
चमनाकाअनमयकाशकदिनु॥ ॐ निमनामयकाश॥ ॥ ॐ निमनामयकाश॥
करीलायानि वंजनीमनाह नदासद्वर्गद्वितीयखण्ड॥ ॥ यमककाकोवा॥ ॥
सुलदहनधनिषाययतिमूर्धवृत्तिताकाककाकदिनु॥ ॥ यमकियाकोवा॥

ॐ न्दियदात्रानिकसीकजावृत्तिकी विषयासां जाणीतावृत्तिका कियाकदिनु॥ ॥
यमकर्मकोवा॥ विषयागद्यादयसाजाययायीवृत्तिताकाकर्मकदिनु॥ ॥
यमज्ञानकोवा॥ अर्द्धकात्रवृत्तिमदीचेतनराससहितताकाज्ञानकदिनु॥ ॥
यमज्ञानकोवा॥ कियावृत्तिमहिरासचेतनसहितताकाज्ञानकदिनु॥ ॥
यमज्ञानकोवा॥ कर्मवृत्तिमहिरासचेतनसहितताकाज्ञानकदिनु॥ ॥
यमसमाताकोवा॥ ज्ञानासाक्षीयमाताकदिनु॥ ॥ यमसमाताकोवा॥ ज्ञान

हीमायमाने कहि न॥ ॥ यन्त्रयमिति कोटा॥ क्लृप्तसाक्ष्यमिति कहि न॥ ॥ यन्त्र
 यमाज्ञानको॥ न सवलि पृटी कय कासी भूगदि न्दीयसदादि विषयविची
 संविकायकासी भूविद्यान आयकाजाला कायमाज्ञान कहि न॥ ॥ यन्त्रयमा
 ज्ञानकोटा॥ आयकादि पृटी मयजान गाकायमाज्ञान कहि न॥ ॥ यन्त्रयक
 त्रयज्ञानको॥ वेदान्त महावाक्य कायथंज्ञान अधिकारी चतुष्टय साधनसहित
 विषयजीवध्वन कीनक ना सर्वधवाधक वेदान्त वाधक वक्ष्यया उनसंसात्र

ध

दृष्टव्य कीनिवर्तिता आनन्द कीयादि नवान्न नूवं धकाज्ञान गाकायक न
 गज्ञान कहि न॥ ॥ यन्त्रमहावाक्य कोटा॥ जावाक्य न अखण्ड चैतन्य कायथ
 थज्ञान हाक्षी गावाक्य कामहावाक्य कहि न॥ ॥ यज्ञान मानंद वक्ष्य अहं
 वक्ष्यामि तत्त्व मसी अयमात्मवक्ष्य ॥ ॥ मि महावाक्य ॥ ॥ यन्त्रयक त्रयवाक्य
 कोटा॥ न नित्रो धान वाद्य कि न वाधन च साधकान मूमक न वं मूक ॥
 म्मायन माथगा॥ माता इय माता पिता अय पिता ॥ ॥ योदि न्दीयको अर्थ

विरुचनेनाही॥ ताकायकृतवाक्य कहिनु॥ ॥ यमसविकल्पावाक्यको
द्यायगावाण्मानिरुगतानिजायंनयनजानातिजीवंति॥ न्यादिनुर्वकद्व
थमहात्मन्यजायते॥ न्यादि तस्मात्तवानुत्तमादात्मन आकाशसंस्तु
न्यादिवाक्यसविकल्पावाक्यकहिनु॥ यमेना निर्विकल्पावाक्यकोद्य सग्यज्ञानम
नेहं॥ न्यादियायं विज्ञानमययाल्यबुद्धं ह्युत्तयति॥ न्यादिवाक्यकोका
निर्विकल्पावाक्यकहिनु॥ ॥ यमसविकल्पावाक्यकोद्यामहात्मनोअन

वाक्यनिर्विकल्पादिगसवअवाक्यत्रवाक्यकहिनु॥ ॥ यमसविकल्पावाक्यको
द्याकायकर्मकादिनिषिद्धकर्मकादिकत्रिके निव्यकर्मनेमिरुकर्म
यायश्चिरुकर्मकत्रगाकाकर्मकाउकहिनु॥ अर्थकोम्यकर्मअभियाति
ष्टमहामादि॥ न्यादि॥ निषिद्धकर्मवक्ष्यमदिवतनांयाश्चिरुचात्या
ष्टादिक॥ न्यादि॥ कर्मनाकाकर्मकाउकहिनु॥ अर्थवावक्ष्यमक
मनाकाकर्मकाउकहिनु॥ ॥ यमसविकल्पावाक्यकोद्यागिरुममय

वक्ष्यामि ब्रह्म नूतनं ब्रह्म आत्मनि अनुसंधानं अथवा वेदान्तत्रयं हि नूतनं गरी
 श्वयावुक्तं यो हि तं अनुसंधानं आत्मनि अनुसंधानं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 त्मनि विदितं नूतनं नूतनं निगूढं पासना ॥ अथवा अहं वक्ष्यामि नूतनं ब्रह्म
 तं नूतनं नूतनं निगूढं पासना ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यत्किंच उपासयामि ॥
 यत्किंच नूतनं अकार उकार मकार नानादविन्द ॥ वक्ष्यामि ब्रह्म नूतनं गीवसदोधि
 वा ॥ अथवा अकार उकार विलाया उकार मकार विलाया मकार अहं मा

आविलाय अर्द्धमाशय नूय विलाय य नूय नूय मात्मानवगिष्ठिना न
 तत्तु उया सना वूयति ॥ ॐ तिउया सना काउ के दिना ॥ ॥ यन्नरूपनकांयको
 ध्याते त्वमस्यादिसर्गं स्नानमननं वेदं ॥ सद्वात्मा वेदं वेदं सद्वात्मा सग्यं स्ना
 नं अननं तं आत्मा वेदं ॥ सग्यं न कं स्नानं स्नानं न कं अननं तं अननं न कं ॥ अदिगीय
 दिगीय नास्ति न कं भवादिगीय वेदं न रुताः स्ति किंच न ॥ ॐ तिस्नानकांड ॥
 कमाया सना नदिनं पनूय साध्विवि वडि रं कव न स्नानमाशु नव गिष्ठिना ॥ ॐ

नकांडनुवमुच्यते॥ इतिज्ञानकाण्डा॥ ॥युष्मद्वेदाककोटा॥ज्ञानकांडनुव
उपनिषदवेदांग॥वेदानांअंगवेदांग॥उक्तमिमासानुववेदांग॥इतिवे
दांगउपनिषद॥ ॥युष्मद्वेदाककोटा॥युष्मिमिमासानुववेदयाक॥युष्मसा
धुनववेदकर्मवेदज्ञानवेदांग॥वेदानांअंगवेदाना॥उक्तलीयुष्मसाधि
कर्मयातांगेर्लानिवेद॥गद्यउक्तज्ञानिवेदांगवेदानाकर्मवेदांगवेदा॥ ॥
इतिगीतांगयुष्मदीरायानिर्गुनीमनाहनवासकर्मगीयखड्ग॥ ॥

अथयुष्मथांगकोटा॥थांगतंअष्टांगयुष्मकोटा॥अंगकहिनुह॥ ॥यम॥
नमःआसनयागयामयुष्माहानक्षत्रयक्षानसमाधि॥इत्यष्टांग॥
तिनमःयमयैयदंगमनुस्मृतिभेदकुरुकुरुकहिनु॥मनयुसादलेयनिडा
विषयचंचलनानिकत्रिकनेहिन॥संगार॥युत्पवदुलारभेसंयुक्तनहामोने
॥मिष्मवातिवेकाग्याग॥इतिरुयनिगुह॥गद्यदेयविषयकाग्याग॥दया॥रु
तयागिसानिर्गुनीनगा॥दाकृष्णवद्वानमहिचक्रुवगाआगुरुग्याग॥आसि

नवेराजनकन॥१॥सुखसुखविनानकन॥१॥उयवास॥अयुक्तआहानन
कन॥१॥शाअनि॥योगकनवेमःअनिगाथनाहि॥१॥सीवडेने॥साधकव
जना॥योगकनवेमःसीकासंगग्योगरंगमदिअमलनखाळ॥१॥सिधंयद
नम॥ ॥आसनकलिगुह॥चीनासीनसआसनसंगनेचीनासीना
सजीवाजीनिकीवठककीयधिःनस्यमससात्रचीनासीआसनचीनासीमः
सानसाताआसन॥खलिक॥गमूखा॥यद॥हंस॥१॥वापुकाकआसन॥सि

हंगनूतःकूमनागा॥नवानविष्कआसन॥वीनःमयूनःवजःसिध॥नचा
निनुडकेआसन॥रुगआसनगकिका॥यधिमःउगानगिवकाआसन॥उगा
नधनूवसवकाआसन॥१॥सिधाउगआसन॥घाउगमहिचान॥यद॥यका
ननसिधःयदःसिद्धरुड॥१॥सिचान॥चानमयाययद॥यदःसिद्ध॥याय
मनक॥यद॥सिद्धासन॥१॥सिआसन॥ ॥यावमयामकलि॥उरुमःमध
मःकनिष्ठा॥सिधायामयामःदादगमाउपूतःचनुकनि॥गकिप्रमानवूरु
कसर्व॥१॥वाउगमयानिचं॥सूयककनियरुकनिष्ठायामःदुनीमा

मम स्वमा॥१॥ उक्तं मा॥२॥ या ध्यायामा॥ ॥ यथाहात्र नुक् वृत्ति
उत्तेजः गादी कायहं॥ ध्याने ध्यायं च यं च ह न कीः अथवा वक्ष्या विष्णु नृद शि
व सदा शिव कीः ध्यान नुक् विषय वृत्ति न हं॥ समाधि दाय संविकल्पानि वि क
ल्पाणि आ० अंगया गक क हं गु नृ न या हं यं॥ ॥ ह्रिय की वा॥ ध्यातुः त्व
कः च हं किं काः नासा॥ ह्रियं च हं न ह्रिय॥ वाक्ः ध्यानिः पादः उ य ह्रुः गुदा
ह्रिक म्र ह्रिय॥ ह्रिद (ग) ह्रिय॥ ॥ पञ्च विषय की वा॥ हा द्याः स्पर्शः नृयः नमः
गन्धः स्पर्श विषया यं च हं न ह्रिय की त्र क हं॥ गृह्यः गतिः आनन्दः विसर्गः॥

ॐ तिर्पत्रविषयकभूदियंकी॥ ॥यन्मूर्तिमन्त्रकनकोटा॥मनःवृद्धिःविक्र
अर्हकानःॐतिर्पत्रकलुचउष्टय॥अर्हकलुकीविषय॥संकल्पःनिश्चयःअ
नसंयमनःगर्वा॥ॐति॥ ॥यन्मूर्तिमन्त्रकनकोटा॥दिक्वाकश्चवि३वन
६४पृथ्वी८अग्नि८ॐदुर्गाउपेन्द्र८पुत्रायमित्तमूर्त्यु१०चन्द्र११वक्त्रा१२केश
१३नूड१४ॐतिदवता॥ ॥यन्मूर्तिमन्त्रकनकोटा॥प्राजासमानश्चउद्यान३यान४
यान॥नागःकूर्मःहृकलाःदेवदत्तःधनःॐतिविष्टप्रायक्रिया॥ ॥

[illegible]

गमनकयलवक्ष्यकीलीनमायुधुआयूकयलयः इआयनलोः तीऊाह्ना
नयलोः कामेउत्यनित्तिगियलनाहीन॥ मूककोसनुकेअद्वेतअखंदनूः
यअह्माह्नानयल॥ विद्याह्नानओलोउपऊनाहितीलोअविद्याअखंदका
ल॥ ह्निगाला॥ ॥यभकर्मकोवा॥ ऊवलोह्नानउपऊनाहीनोतीसंचितया
नेक्षकियामानकर्मविधिरुतरावीधवरुमानयतिबंधलीन॥ ह्निगर्म
॥ ॥यभअरावकोवा॥ शिगुमीमायालीनचैतन्यहहीजीवअराव॥ ऊवलो

ह्नानउपऊन॥ ॥यभअरावकोवा॥ ॥यभअरावकोवा॥ ॥यभअरावकोवा॥
नऊगमतीनतवलोह्नाननाहिउपऊ॥ ह्निगियुवा॥ ॥यभअरावकोवा॥
ऊवहीरुवकीयवृत्तिर्नचैतन्यअपनयाहिनजान्यातवहीनिरुवा॥ ॥यभ
सहृवकोवा॥ तीनरुवमचैतन्यऊवलोअपनयामानंतवलोसरुवअह्ना
तह्नि॥ ॥यभअरावकोवा॥ जाकानासदायसाह्नाआकात्रह्नि॥ ॥
यभनिराकात्रकोवा॥ जाकानासनाहिह्नाह्निनाकात्र॥ ह्निगितिनित्राकात्र॥

यस्य आकाशनिनाकाशदानानाही साकोषा॥ आकाशजनात्मादहं ॐ नि
यमनयायाज्ज्ञानसहिता॥ निनाकाशसाक्षीवक्ष्यात्मासाज्ज्ञानात्माका
शयनयामाना॥ अत्रैकनयकाशयनयानजानकिंहीवक्ष्यामी॥ सादा
नानाहीकिं॥ अयनयाआयहीनाहीकीती॥ ॥ ॐ गीरीशमयम्भरुगीरा
मानिनीकनीमनाहन्दासदां चतुर्थस्वीद॥ ॥ यमजुनकोषा॥ अत्रज्ञा
नमूर्ति॥ ॐ ध्वनितिकासंसात्रनयानकन॥ ॐ साउत्र॥ ॥ यमनिवाकोष

धृतिवैक वेनाग समदमउय वंगिगिका ॥ ॥ यद्वा समाधाने ॥ ममूदग
 ङ्गिगिया ॥ ॥ यद्वा उयदं काकोला ॥ आत्मा अनात्मा का विद्या त्रुता नगिगिका
 अयनं स्वतृपका ज्ञान सांश उयदं ॥ ॥ यद्वा की काकोला ॥ ऊव निर्मलः
 ज्ञान दया ॥ तिनिना काना ॥ जन्म मत्रय का कय रुया ॥ ॥ ॥ यद्वा मं रुका
 ला ॥ अद्वा तया कय गतु लं अशिव द्वा ॥ गव सिष्य कद किं अद्वा वद्वा सिना
 तमाहावा कय मं रु त ल्वम सि ॥ तिमनु ॥ ॥ यद्वा वरु कोला ॥ वरु चाना ॥

समगुणीयकृतिलीनं॥ वाक्पददहकीकागिसमगुणीमिश्रितयकृतिलीनं॥ क
लोपदहकीकागिः त्रुगुणीनमगुणीमिश्रितयकृतिलीनं॥ वैश्वदहकीकागि
नमगुणीयकृतिलीनं॥ गूढदहकागिः वलुत्रोत्रिमहिशिगुणीयकृतिलीनं॥
नकवलुमहीचात्रावलु॥ गीमोहोत्रयमागयावारुका॥ अथवावलुदोयः
आदिवाक्पदमृतिवांडात्तदहाहिमानीचांडात्तद्वहाहिमानीवाक्पद॥ वक्
जानातीतिवाक्पदना॥ वज्रसूचीउपनीषदयमानवासिष्ठयमाग॥ इति वलु॥

॥ ॥ यमसूत्रमकोला॥ आशमचात्रिः वक्त्रात्रीः गृहसूः वानयनसूः संचा
सा॥ यंत्रमासद्विपाशमवेष्टवः आगमयंत्राणीकमत॥ वक्त्रात्रीविद्या
यमिवक्त्रविद्यानिष्ठात्रहः सार्धकवक्त्रात्रीशास्त्रीसंचासीजनआदिसंचा
सी॥ अत्रयक्त्रवाक्पदवक्त्रात्रीगृहसूहयकत्रियुगउपजावयूनमीसहि
नवनमहिरुतवदानयसूयंत्रमुकात्रकदनंतत्रविदिकासंचासकत्र
॥ वक्त्रजानकेविद्वत्तसंचासीहास्त्रीयनमहंसः॥ इति आशमा॥ ॥ यम

[illegible]

नन्दताकीविष्णुनवींनिमनरा॥ ॥यस्यजन्मकोटा॥अहंवक्तास्मि विद्याउ
रतिजन्मनि॥ ॥यस्यविष्णुकोटा॥स्वनूयदलनसंज्ञानकीयाफसाहीवि
द्या॥ ॥यस्यजन्मकोटा॥ज्ञानयाफरयनस्वनूयकीहृन्वगमासाहीअमित
भाकृतिप्रसन्नमाह॥ ॥यस्यगुणकोटा॥आत्मकागिगुणव्यवहानन
हेतदधीनसाहीवडागुण॥ ॥यस्यकायकोटा॥आत्मकागिगुणसहितदधि
नसाहीअडायाया॥ ॥यस्यजन्मकोटा॥ज्ञानयाफरयनजीवनमूक्ति

हे सांख्य वडा जस ॥ यन्मय जस को वा ॥ जाका क्लानकी पाय ना ही जीव
भूक ना ही सांख्य जस ॥ यन्मय दिग को वा ॥ खड्गादि सत्र पर्यंत सा
नक व द्वा रा व म हि न हें वृद्धि जा का सांख्य दिग ॥ यन्मय को वा ॥ आय
व व द्वा ग रि नि जान सांख्य मूर्ख ॥ यन्मय को वा ॥ संसारी जीव अहं म
ना हि मानी सांख्य रागी ॥ यन्मय को वा ॥ जाका सत्र पर्यंत क्लान अहं
म म हि मानी न न हि त सांख्य अनागी ॥ किं अनात्म वृद्धि सांख्य रागी ॥

नृपसु वृद्धि जा कं सांख्य अनागी ॥ नि अनागी ॥ ॥ निगी म न स ॥ ॥
नाहं माम नाहं न का स नि नं ऊ नी क न मं अ म खं ड ॥ यन्मय को वा ॥
अथ क ज्वा रु ग स म छि य छि का न व ग नी न स हि त स म छि अहं कान स
हि त ॥ स म छि वृद्धि य छि वृद्धि स हि त स म छि द गं ॥ द्रिय क्लान ग कि क्रिया
ग कि य छि ॥ द्रिय पा व स हि त ॥ यं च यं ची क न रु क्म नृ पं च क्ल स रु क ग
दा द य विष य स हि त स म छि य छि आत्मा कान क ग नी न ची ची स ग त्व का

मातं चेतन्यता का कुरु कही न॥ समष्टि कं गत्री तनी न चो वी स त त्व महि आ
 न॥ अत्र यष्टि कं गत्री तनी न चो वी स त त्व महि आ न॥ मातं न कं गत्री तनी
 चो स त त्व का ना का कुरु कही न॥ ॐ ति कुरु ॥ ॥ यष्टि कं गत्री तनी न चो
 वी स त त्व महि समष्टि यष्टि का उ या वि कुरु त रु द रु ॥ समष्टि गत्री तनी न चो
 क त्रि कं चेतन्यता न कं जानी न॥ किं त त्व त्वं त्वं त्वं समष्टि व दी उ या वि का
 आ य का सी चेतन्यता न कं जानी न॥ चेतन्यता न कं जानी न चो वी स त त्व महि आ

हः साष्टि कं चेतन्यता न कं जानी न चो वी स त त्व महि आ

गी चेतन्यता न कं जानी न चो वी स त त्व महि आ न॥ अत्र यष्टि कं गत्री तनी न चो
 वी स त त्व का ना का कुरु कही न॥ ॐ ति कुरु ॥ ॥ यष्टि कं गत्री तनी न चो
 वी स त त्व महि समष्टि यष्टि का उ या वि कुरु त रु द रु ॥ समष्टि गत्री तनी न चो
 क त्रि कं चेतन्यता न कं जानी न॥ किं त त्व त्वं त्वं त्वं समष्टि व दी उ या वि का
 आ य का सी चेतन्यता न कं जानी न॥ चेतन्यता न कं जानी न चो वी स त त्व महि आ

युगलानि कोटा॥ चित्कलान सांख्ये राति॥ ॥ यमलानि प्रिय कोटा॥ आनंद सा
ख्ये राति प्रिय॥ नागं कुरु कुरु सांख्ये सच्चिदानंद कुरु कुरु सांख्ये मुक्ति राति प्रिय
॥ ॥ यमनाम कोटा॥ नाम स न कुरु कुरु॥ ॥ यमनूप कोटा॥ नूप सवे कुरु कुरु॥ ॥
नामनूप आत्मक कुरु कुरु प्रिय टी जगत्॥ ॥ यमदृष्टि कोटा॥ मुक्ति अवाप्त स
मष्टि यष्टि आत्म कुरु न कुरु विधानो म नूप प्रिय टी लीन न कुरु अय दाय
न कुरु डम लीन पिंड मि लीन॥ ॥ यमदृष्टि कोटा॥ दृष्टा च न न कुरु सवे द

अकाय कासी सच्चिदानंद आत्मा वक्ष मुक्ति राति प्रिय स्व नूपी दृष्टा न क
स्वनूपी दृष्टा रु द न जीव अ न साक्षी क दिना॥ न कुरु दृष्टा च न न कुरु नि दृष्टा च न
न॥ ॥ यमयत्रिभि न कोटा॥ जा दृष्टा चिदा रा स का लीन च न न कुरु द ग म
दि॥ सांख्ये यत्रिभि न सांख्ये न कुरु द ग कुरु॥ ॥ यमयत्रिभि कोटा॥ जा कुरु कुरु न क
सवे कुरु मदी अनुसूत यु का सा सांख्ये पूर्व समष्टि यष्टि कुरु मदि नूपी दृष्टा
॥ ॥ यमयत्रिभि न पूर्व न न दि न कोटा॥ जा दृष्टा का स्व नूप का द सा मि ली

आना नाहि जा मया यथापकता नाही ॥ ने सा वक्ष निर्विकल्प पति चिन्न यदु
विकल्प नाही ॥ ने सा आत्मा वक्ष निर्विकल्प ॥ नित्य विचिन्न यदु न हि ना ॥
यत्न संसय को वा ॥ य विचिन्न यदु न हि ना अदिनी य वक्ष न क ह किं दाय ह
न क हि दाय गमये आ न दाय क उ व नी न ह किं आ न दा विक स्व नू य ह आ न
द स्व नू य ह यः आत्मा त न्या ना ह य न मात्मा ॥ नित्य सं ग या वक्ष त्रि सं स ॥ आ
त्मा द ह न न्या ना ह किं मित्या ह रु तो न्या ना ह न ह न व क रु तो का ह किं

ना ही रु ला अ क रु य ये त न य ह किं ऊ ड रु वे त न य हा य गे को व जाने ये आ
न द स्व नू य ह आ न द न क उ व नी ना व रु रु ला स चि दान न द हा य गमये प
न मात्मा सो न क ता ह किं रु त ता ह रु ला य न मात्मा सो न क ता हा य नी ये न क
ता का सा धे न हान रु के क म ह हान ही मा ह को सा धे न हा य गमये क म सा
मि ले वि ना के स अ क ला हान मा ह क न क रे वि ना जान न मा ह का हा या आ
त्मा अ नू य रु ही रु म ना ही जान न किं द ह न न्या ना आत्मा जाना ना हा य

गाई हन नाना के दिष्टावद ॥ रुम का गा रुम जानो किं नाना रु अत्र रुम य
ही नही जान ग किं आत्मा सुख नूय ॥ आ सुख नूय आत्मा हाय गा दू ४ स्त्री
का आय का मान ॥ अत्र यत्र मे अत्र सा न क गा हा गो यत्र मे अत्र न क स उ क मी का
न क न आ न क हो ॥ अत्रि संभय ॥ ॥ यत्र विद्य यत्रि को ॥ मिथ्य ज्ञान वि
द्य यत्रि किं अं स उ नै नि क ट के व द उ ॥ ध द मि न न स आत्मा का द रु ही मा
न अं स उ व नी का स य गा ग सीध का नू य मान न स आत्मा क रु द रु अत्रि

यम नया दा सहित मान किं आय रु ज्ञान स नू य अ ज्ञान काय का से किं अ ज्ञा
रु ॥ अधि ज्ञान वि ना अरु स न ना ही य आय के अरु म नू य मान क रु हा का
अत्रि विद्य यत्रि ॥ ॥ यत्र जीव नू क को ॥ संसय विद्य यत्रि न न हित जीव नू
क अ सं रा व ना विद्य त्री न रा व ना गा क जीव नू क क रु न ॥ आय रु य ना ही रु
द रु की गा न सु ल द रु सा अत्र लिं ग श्री व सा या द सं या ग रु ॥ गा न जीव नू क
क रु न ॥ या द सं या ग वि ना सु ल स नी न रु ना ही गा न या न व का सं या ग रु य
द रु का या न व का द य वि ना श्री न सु ल का पा न ना ही गा न जीव नू क क रु न ॥

गहामिधमजायदादिसहिगमानीथः यूधैयकः ऊरुयअवस्मासहिताजीव
 न्मुकनामूकनाहीनधरुः तहाकहिउरुकिं जीवन्मुकयद्वंधरुहोगामूक
 कोकहिनाजीवनसहितअनः अवस्मासहितगहामिधमानीथः ऊरुयअवस्मासहिताजीव
 मित्रहितहेतीनअवस्मागीनअरिमानी॥ विदातासमहिअरुहानका॥ आ
 यसाउरुगामानीरु॥ सुहानविनाविचारकनिकः अक्षसकीहीनगाकनिह
 गागंसूककहीन॥ गहाअक्षसविवरुकाटहीन॥ अनअक्षससहितका
 दृष्टीगकहिउरुकिं॥ एकवनमंवटा नूअयनेमा नवेलाजातहा गहासि

रुकादधिकनिवृद्धयनिवृटिगयो तावृकयनिवृकवानत्रत्रहे॥ गवसिंहमा
 नूयकादधिकनिवृद्धकंगत्ररुत्रआयभराहयाः सूर्ययकासकत्रिमनूयः
 कीकायाधनमीयप्रदविनरु॥ अनवानत्रकीकायाहित्ररुत्रधनमीयप्रदवि
 उरुसुसिंहमनूयकीकायाकातोकात्रिकवानत्रकीकायाकायकत्ररु
 यावत्रमीयमतहनगववानत्रकिलकिनायकनिगिनियया॥ नादत्रने
 यकनिलया॥ यनेमनूयकीकायाकायकत्रगहयाः गवमनूनविचारक
 याकिमनीकायामाहिनरु॥ गगकायाकायकत्रोमकायासायाहो॥ क

रुनलाया किं दधामुखवाननकाया मअयनयोमानिकलिं नयेहाये सिंदकमु
 खमादीयया ॥ गानममगाअयनयाहेनजाया ॥ गानमत्रासिंदकहाकनिरुक्क
 रुनलला सेंगे मूकअध्मासग ॥ जीवनामअनुअवस्मानमूकतामजीवनमूक
 कहिउ सुहमिकाकहादेकत्रिकजीवमूकिकीविविउगायेबिउलोयावेवु
 कत्रिकंतिजीमूक ॥ ॥ यमविदरुमूककाया ॥ जीवमूकमहाविदरुमू
 कदेयकात्रमानियरु सुकहिनुह किं लकोथकत्रिकतामदरुचुगदी वि
 दरुहाअनुवाचाथमदरुदधिथरु ॥ अवदरुकायातहायतवविदरु

मूककहीन गानदरुसहिग जीवमूक कहीय दरुयाग रुथ विदरुकेव
 ल्यमूककहीन ॥ ॥ गतिविदरुमूक ॥ ॥ यमस्वतूयकोया ॥ आलीजीवमूम
 हीलदरुति कत्रिक अखंडनिर्विकल्यअनुरवाहीजागमअवस्मानमहि ॥ अनु
 स्मरणजागमकअलावसुवृयमिमहि अनुरमुममत्रघरयेतनिर्विकल्यता
 अयनीसाजीविदरुमहि तसस्वतूयरुसमहि वविकल्यनहीदरुमहीयरु
 गानरुयमहिनिर्विकल्यतास्वतूजानीयजामहि जीवमूकविदरुमूकस्वतूय
 कहिवानाहीअनुरव लकषकहि वकनाहिउ सास्वतूय ॥ ॥ गतिविदरुमूक

तस्य ज्ञानं नीतिवत्, नीमवाहकस्य सदा गलयास्य मधुमयम् ॥ ॥ पृथ्वीक ॥ आन
 क आत्मा गलत कालक ज्ञानी रूपा कालमही जीव मुक्त के के विदह मुक्त
 य ॥ अत्र वरु मान कालम दि जीव मुक्त के के अत्र विदह मुक्त य ॥ अत्र विषा
 कालकाशी नुसही जानीय ॥ ॥ आत्मा एक रूपा कालम दि अत्र क ज्ञानी रूपा
 न कोष आत्मा अत्र वरु मानम दि ज्ञानी न कोष आत्मा ॥ अत्र विषा म दि रूपा
 कोष कोष आत्मा ॥ अत्र गीत कालम दि अज्ञानी न कोष कोष आत्मा ॥ आत्मा
 न कोष कोष आत्मा न कोष कोष आत्मा न कोष कोष आत्मा न कोष कोष आत्मा न कोष कोष आत्मा

जोस अत्र जीव मलाका गामही य वीरुत आकाश न क रूपा य घटा दि अत्र
 क घट रूपा य अत्र क घटा काश कही ॥ ॥ रूपा लम दि दंशरु य लीन ॥ अ
 त्र अर्थ वीरुत जोस मला वायु गाम दि य वीरुत वायु न क रूपा ॥ य रूपा न क रूपा
 अत्र क रूपा वायु म दि मानि न ॥ अत्र अर्थ वीरुत मला न जोस मदीय वीरुत न जोस
 न क रूपा य वीरुत मला न अत्र क रूपा मानि य न क रूपा न जोस म दि ॥ अत्र अर्थ वीरुत
 मला न जोस म दि य वीरुत न क रूपा न क रूपा ॥ य दंशरु य क त्रि अत्र क रूपा मानि न
 ॥ न क रूपा लम दि ॥ अत्र अर्थ वीरुत रूपा मला मही गाम दि य वीरुत न क मही

ह॥ ता न क म ही क अन क रु द या उ रु द न द वि न रु ॥ न क म ही म हि अ नु ऊ स
म हा न उ म हि न क सूर्य रु न क उ ल रु द न अ न क सूर्य न क म हि अ न क सूर्य
द वि न रु ॥ अ नु न क म हा उ ल म न क च नु मा रु ता व नु मा न क क अन क उ
ल रु द न अन क य नि वि व च नु मा क हि न ॥ न क च नु म हि उ स या सा ग ट ह्या
न क रु ॥ न स द ह्या न न क क हि न रु ॥ न क उ द च न न ग म हि न क द ह्य अ नु न
न क न क द ह्य म हि अ वि द्या म लि स त्व न क रु ॥ न म लि न स त्व क अन क रु
ग रु न ॥ न म लि न स त्व अ वि द्या सा म हा आ त्मा न क सा की अ वि द्या क अन क

रा ग ता रा ग रा ग य नि अन क आ त्मा हा ग रु य न क आ त्मा ॥ उ स आ का षा उ
जा द म म हि का घ ट रं ग रु य न क सा षी सूर हि न घ ट म हि रु उ व ना दी
न स ही वा य स न ता जाना न स ही न उ का जाना ॥ न स ही उ ल य धी सूर्य च
नु जाना जाना उ या धि का रं ग रु य उ या धि ना दी ॥ च नु दि क उ स व न न स
रु न स आ त्मा अ वि द्या क अन क रा ग रु सा उ रा ग रा ग काल म हि रु ग रु य
सा रा ग ही न न पा न ॥ आ त्म अ रु ग उ रु रु काल म हा सा अ व रु सा रु
वि द्या काल म हि हा य ॥ न न वि वा न न उ स त्व म हि न न अ न न व म

भाऊ निडा कलियुग दुःख गते सवशांति मिटिगें ॥ गेस अविद्यामही उर्गल स्वप्न
कमांमज्ञान अज्ञान वंधमाऊ अविचार कलियुग ॥ जोगत किं विचार कवि
दया उत्र वंदांते द्वात्राता आत्मानिष्टमूक वंधमाऊ ज्ञान अज्ञान ज्ञानी अ
ज्ञानी न पाळें न सवशांति मिटि गेली ॥ एक अखण्ड विदघन समुद्र महि अून
क वृद्ध दागत्रंग रुंन नाम नूयलीनं दव मनूष्य यशुयं की प्रविगदगं ध
वृज के किं न प्रकाव न ऊं गमादि अून क का दिव द्वाधुलीनं एक विदघन
समुद्र का किता लह ॥ नासुं मे मही समुद्र एक ह जा काळ नोही न सा विचार

विमल विग आनंद अस्मिराति प्रिय सव आत्मा एक ॥ ॥ निमीगताय नमः
रावामे नाले प्रयास निर्मळ नीरुत सकल मखंदा सात्रभा ॥ सगका नादि अलाव सा
सगकहि जो आत्मा यत्र मातादि असग अलाव साळी अनात्मजा निथा ॥ अक
कत्रध ऊवनां दि यत्र मातादि अलाव न व के हि कात्रध क मो हिं को ययमान
ज्ञाता ऊही ॥ दाहा ॥ यत्र माता ज्ञाता क हा अंत कत्रध विन ना हि ॥ यमान ज्ञा
नयूनि गज्ञान हि सरवय नि कात्रध मो हि ॥ यमिति विषय ना हि को यत्र माता
की साय क हा ॥ विषय अज्ञान रु सा आत्म की हा य ॥ आत्म सा की ज्ञान साधय

॥ यु का शी मा हान ॥ यत्र मा ता यत्र मा धा सव रु या मृ ना त्म रां न ॥ दा हा ॥ आनंद
 आन च को श म उ य ऊ वि ष या नं द ॥ रि यू टी क रि सा पा ण न नि स क रि यू त्र ण चं द
 ॥ ऊ ल कं व त्र य ऊ ल म ही उ य ऊ व द्द दा सा य ॥ रि यू टी वृ ष क रि व द्म म रि रि यू
 टी आ न च दा या ॥ उ य जि त व द्द दा वि न स दी न स रि यू टी जा न ॥ ऊ ल ऊं सा क
 सा न दे न स व द्म व द्म न ॥ व द्म आ ता आ नि थ सा णी मा ता व द्म ॥ आनंद आ
 मा या णी न आनंद आ णी व द्म ॥ रि यू टी वृ ष दा कां नि य रु ना म नू य स त्र
 ॥ रु द न स न त य त्र गी त स व जा य त स व य म स त्र ॥ ॥ ॥ ॥

रु नी म ना रु त्र दा स रु त रा या मृ ष म र व ॥ ॥ जा त रु त्र दा स रु त रा या मृ ष म र व ॥
 रु म रु त्र दा स रु त रा या मृ ष म र व ॥ ॥ जा त रु त्र दा स रु त रा या मृ ष म र व ॥
 सा र वा आ क रि न ॥ अ नू द्द गी व नु ल दा सा ल दी य ॥ अ रुं वा च द रु अ रि मा नी ल
 अ रुं क रि अ रुं व द्म नी ॥ वि दा रा स वा च अ रि मा नी अ व द्म नी न के नी नी ॥
 रु नी या स ल अ सा मि ले य का से रु नी या मा रि नी न न दी ना से ॥ रु नी या व द्म आ
 ता जा ना व द्म सा सा की नू य व द्म नी ॥ सा की अ रुं ल क धा ल दी न ॥ अ रुं व द्म सा
 सा न के क दी न ॥ स का थ क का णी जा म ही द न रां न न दी दी ण ॥ द न रां न वा ध

